Artistic Narration Vol. XV No. 1 Jan.-June 2024 ISSN (P): 0976-7444 (e): 2395-7247
Impact Factor 8.898 (SJIF)

संगीत तथा उसका व्यवसायिक पक्ष

ऋचा वर्मा
शोधार्थी, संगीत विभाग
महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखण्ड़ विश्वविद्यालय,
बरेली
ईमेल: *richaverma220500@gmail.com*

प्रो० प्रवीण सैनी
शोध निर्देशिका,संगीत विभाग
गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कॉलेज
मुरादाबाद (उ0 प्र0)
ईमेल: *dr.praveensainip@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:

ऋचा वर्मा
प्रो० प्रवीण सैनी

संगीत तथा उसका व्यवसायिक पक्ष

Artistic Narration 2024, Vol. XV, No. 1, Article No. 18 pp. 103-108

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2024-vol-xv-no1-233

सारांश

हमारी संस्कृति प्राचीन काल से ही संगीत का आचरण एक विशिष्ट वर्ग अथवा समुदाय के द्वारा व्यवसायिक रूप में कर रही है। इसी काल को हम संगीत के व्यवसायिक पक्ष का मूल अथवा आरम्भ मान सकते है। वर्तमान में रोजगार के क्षेत्र में अन्य क्षेत्रो की भाँति संगीत कला का भी विशेष स्थान है। प्राचीन पारम्परिक संगीत कला को सुरक्षित रखने हेतु इसे गुरूकलों एवं सांगीतिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों में पढ़ाया व सिखाया जा रहा है। यह कला जहाँ एक ओर पीढ़ी–दर–पीढ़ी सुरक्षित है वहीं जीविकोपार्जन का माध्यम भी है। यह स्पष्ट ही है कि कोई भी मनुष्य, परिवार, समाज अथवा समुदाय अपने धनोपार्जन के लिए किसी–न–किसी काम को रोजगार के रूप में अवश्य ही अपनाता है। प्राचीन समय से ही संगीत कला आध्यात्मिकता के साथ–साथ व्यवसायिक रूप में भी मनुष्य के साथ जुड़ा है और आधुनिक काल में सम्मानित परिवारों का रोजी–रोटी का साधन भी है, जो भिन्न–भिन्न माध्यमों से उन्हें धनोपार्जन कराने में अहम भूमिका निभा रहा है। प्रस्तुत अध्ययन संगीत में रुचि रखने वाले प्रत्येक मनुष्य, समाज व राष्ट्र के व्यवसायिक विकास में वृद्धि व सफलता और विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक है।

मुख्य शब्द

संगीत कला, जीविकोपार्जन, व्यवसायिक विकास, आध्यात्मिक उत्थान।

संगीत तथा उसका व्यवसायिक पक्ष

ऋचा वर्मा, प्रो० प्रवीण सैनी

प्रस्तावना

संगीत मोक्ष प्राप्ति का साधन है। संगीत मनुष्य जीवन के लिए परमात्मा के द्वारा सुसज्जित की गयी उत्कृष्टतम कला है। जिसे सभी ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। वैदिक काल से ही मानव का संगीत से अटूट सबंध रहा है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसलिए समाज में उपस्थित सभी प्राणियों पर संगीत का प्रभाव अधिक पड़ता है। मनुष्य के बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक उत्थान के साथ–साथ कालान्तर से ही संगीत रोजगार के रूप में दृष्टिगत हुआ है। लय व स्वर से प्रभावित संगीत ने विश्वभर के इतिहास के प्रत्येक काल में अपनी कला की विशेषता से मनुष्य की संस्कृति, जीवन शैली व रोजगार पर गहरा प्रभाव डाला है। जीवन के प्रत्येक पहलू के साथ संगीत ने सामंजस्य स्थापित किया है। संगीत की पवित्रता, विभिन्न सामाजिक परिवर्तन एवं परिस्थितियों के अनुरूप बहुत से उतार–चढ़ाव व अनुभवों से गुजरकर जीविकोपार्जन के व्यापक रूप में दृष्टिगोचर हुई है।

प्राचीन समय में संगीत कला का बहुत प्रचार–प्रसार था तथा उस काल में संगीत कला समाज के हर एक क्षेत्र व संवर्ग में विख्यात थी। प्राचीन समय में सभी कलाकारों की रोजी–रोटी सरंक्षण के जरिये चलती थी। आश्रयदाताओं के सहारे रोजी–रोटी का साधन प्राप्त होता था। आश्रयदाता उन संगीत कलाकारों को अपने दरबार में संगीत कार्यक्रम के संचालक के रूप में नियुक्त करते थे तथा उन्हे पर्याप्त वेतन भी मिलता था। राजा महाराजा द्वारा पुरस्कार के रूप में कलाकार को जमीन, गॉव, वस्त्र, स्वर्णाभूषण, नकद राशि आदि दी जाती थी। भारतीय संगीत की सजीव संगीत कला में परम्परा का विशेष महत्व रहा है। इस कला कौशल में नवीन प्रयोग होते चले आ रहे है। भारतीय संगीत के संस्कार ही परम्परा के अंतर्निहित है। संगीत की परम्परा ही संगीत की आध्यात्मिक शक्ति है। इस कला की परम्परा में एक प्रकार की पवित्र विचारधारा है जिससे प्राचीन संगीत कला का वास्तविक अवलोकन होता है। भारतीय संगीत कला, जो अति प्राचीनतम कला रही है, काल के अथाह सागर से गुजरती हुई वर्तमान स्थिति में सुसज्जित है। उसकी परंम्परा को ज्ञात किए बिना सही जानकारी उपलब्ध नही हो सकती।

जैसे–जैसे मानव जीवन में संगीत का उत्थान होता गया, वैसे–वैसे संगीत का व्यवसायीकरण होना भी प्रारम्भ हो गया। वैदिक काल (2000 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व तक) से ही आध्यात्मिकता भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। वैदिक काल से आध्यात्मिक उद्देश्य के साथ–साथ रोजगार के रूप में संगीत कला को अपनाया गया। इसी युग में चार वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद) की रचना हुई थी। यही वह समय था जब आर्य भारत में आकर बसने लगे थे। आर्यों को संगीत से इतना अधिक लगाव और प्रेम था कि उन्होंने सामवेद को केवल गान करने के लिए ही बनाया था।

वैदिक काल में ब्राहम्ण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र जैसे वर्ग स्थापित हो गए थे, जिसमें ब्राहम्ण वर्ग ही अन्य तीनों वर्गों को संगीत का ज्ञान प्रदान करते थे। स्त्रियों द्वारा वीणा–वादन इसी काल की मुख्य विशेषता थी। इस युग में समाज संगीत के कलाकारों को बहुत आदर–सम्मान की दृष्टि से देखता था। इस काल में उत्तम गायक, उत्तम वादक तथा उत्कृष्टतम प्रबंधकार भी हुआ करते थे। ''रामायण'' महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित महाकाव्य है। इस काल में लव और कुश बहुत कुशल गायक थे। वाल्मीकि गुरु के दिशा–निर्देशन में शिक्षा प्राप्त कर लव और कुश दोनों ने अनेक विधाओं के साथ गंधर्व के विशेष नियमों में बद्ध होकर होकर स्वर, श्रुति, ग्राम, मूर्च्छना, लय, ताल, गायन, वादन जैसी विशिष्ट प्रकार की क्रियाओं

को सीखा। रामायण काल में स्त्री–पुरुषों में भी संगीत बहुत प्रचलित था। इस काल में अनेको वाद्यों का उल्लेख भी प्राप्त होता है।

महाभारत काल में संगीत अपनी चरम सीमा पर था। जिसका उत्कृष्ट उदाहरण स्वंय श्री कृष्ण हैं। उनके वंशीवादन में विलक्षण जादू था। इस काल के पांच पांडवों में धर्नुधारी अर्जुन संगीत कला में भी सबसे पारंगत थे। उनको वीणा वादन और कंठ संगीत पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था। इस काल में समाज के सभी वर्गों में संगीत कला का विशेष अधिकार था किन्तु केवल मनोरंजन मात्र साधन के रूप में ही क्योंकि इस काल में संगीत कला द्वारा जीविकोपार्जन करना अच्छा नहीं माना जाता था। इस काल में मृदंग वीणा, शंख, वेणु आदि वाद्यों का प्रमाण मिलता है।

पौराणिक काल में भक्ति और कीर्तन आदि को बहुत महत्व दिया गया। स्पष्ट है कि संगीत प्रत्येक काल में प्रत्येक परिस्थिति से रहा है। धर्म का कोई भी मार्ग हो, सम्प्रदाय हो, सगुण भक्ति, निर्गुण भक्ति, मूर्ति पूजा, कृष्ण मत, वैष्णव मत आदि सभी में संगीत का महत्व रहा है। हिन्दू भजन से, सिख गुरुवाणी से, मुस्लिम कव्वाली से अपने इष्ट देव की, अपने अराध्य की पूजा अर्चना और आराधना करते है। यही भक्ति का सबसे सरल मार्ग है।

उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि वैदिक काल, रामायण काल, महाभारत काल तथा पौराणिक काल में संगीत की बहुत अच्छी स्थिति थी। इन कालों में संगीत न केवल मनोरंजन के साधन के रूप में देखा गया बल्कि ईश्वर उपासना का भी मुख्य अंग रहा। तो यह कहना अनुचित न होगा कि उस समय भी संगीत कला द्वारा जीवनयापन किया जाता था।

आज रोजगार मनुष्य का महत्वपूर्ण अंग है। रोजगार का तात्पर्य किसी ऐसे कार्य से है जिससे जीवन में प्रगति हो और जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सके तथा जीवन निर्वाह हेतु आर्थिक लाभ प्राप्त हो सके। संगीत में रोजगार के महत्व के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि संगीत कला को आजीविका का साधन बनाकर शिक्षण द्वारा, अभिव्यक्ति द्वारा, साहित्य द्वारा, रिकॉर्डिंग के माध्यम से, लेखन द्वारा, आलोचक के रूप मे, संचार के माध्यम से सुरक्षित रखना है।

अध्ययन के उद्देश्य

मेरे इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य संगीत के व्यवसायिक पक्ष का अध्ययन करना, इसके अतिरिक्त संगीत की रोजगार की परंपरा एव विभिन्न कालों में परिवर्तित आजीविका के स्वरूप को जानने का प्रयास करना, साथ ही संगीत का सामाजिक सांस्कृतिक विकास में योगदान का अध्ययन करना है।

शोध विधि

यह शोध पत्र द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से लिखा गया है। यह अध्ययन मुख्य रूप से विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्र–पत्रिकाओं से एकत्र किए गए आंकड़ों पर आधारित है।

संगीत का व्यवसायिक पक्ष: एक अवलोकन

शिक्षा और रोजगार दो ऐसे महत्वपूर्ण तत्व है जो प्रत्येक मनुष्य के जीवन को सफल, विकसित एवं समृद्ध बनाने में अहम भूमिका निभाते है। रोजगार व्यक्ति को समाज में सम्मान, सामाजिक सुरक्षा तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करता है। वर्तमान समय में प्रतिभावान कलाकारों ने संगीत कला को रोजगार का जरिया बनाकर प्रसिद्धि प्राप्त की और इसे नवीन रूपों में प्रस्तुत किया है। उदाहरणार्थ:– जहाँ फिल्मी संगीत श्रोताओं

का मन मोह रहा है, रोजगार का एक मुख्य साधन है। संगीत प्रारम्भिक काल से ही भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग रहा है। संगीत का आधार आध्यात्मिकता ही है परन्तु समय के साथ परिवर्तित होते–होते मनुष्य आध्यात्मिक विचारों के साथ–साथ सामाजिक, रंजनात्मक व श्रृंगारिक एवं व्यवसायिक मनोवृत्ति और विचारों को भी सरंक्षण प्रदान करने लगा है।

आधुनिक समय में संगीत ऐसा साधन है, जो मनुष्य को मानसिक और शारीरिक रूप से शान्ति और सुकून प्रदान करता है। वर्तमान समय में संगीत कला से जुड़े ऐसे बहुत से कलाकार हैं जिनको समाज में ख्याति प्राप्त है और उन्हें गरिमामयी दृष्टि से देखा जाता है। जहाँ एक ओर यह प्रतिभावान कलाकार संगीत की नयी ऊँचाईयों को छू रहे है वहीं दूसरी ओर हमारी नयी पीढ़ी व भविष्य में आने वाले शिक्षार्थियों के सामने एक श्रेष्ठ उदाहरण भी प्रस्तुत कर रहे हैं और सम्मानपूर्वक अपना जीवन निर्वहन कर रहे हैं।

संगीत रोजगार प्राप्त करने हेतु एक बहुआयामी ललित कला है। रोजगार प्राप्ति के अन्य साधन इस प्रकार हैं– अपनी योग्यता के अनुसार संगीत शिक्षार्थी स्कूल, कॉलेज, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में अध्यापक, प्रवक्ता, रीडर या प्रोफेसर का उच्च पद प्राप्त कर संतोषप्रद रोजगार प्राप्त कर सकता है। आजकल बहुत से प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में संगीत को रुचि या मनोरंजन के रूप में सिखाने के लिए अध्यापकों की नियुक्तियाँ भी की जाती हैं। संगीत शिक्षक, संगीत शास्त्रकार, रचनाकार, संगीत सम्पादक, वाद्य निर्माणक, कला प्रदर्शक, संगीत चिकित्सक, संगीत निर्देशक आदि संगीत में व्यवसाय के क्षेत्र हैं। अपना निजी संगीत विद्यालय खोलकर भी संगीत शिक्षा दे सकते है। रेडियो जॉकी व रिकॉर्डिंग सेन्टर्स खोलकर भी अपनी आजीविका चला सकते है।

आकाशवाणी, दूरदर्शन, मंच प्रदर्शन, समाचार–पत्र, स्टूडियो, संगीत सम्मेलन आदि कलाकारों के लिए अपनी कला को प्रदर्शित करने के मंच हैं। रेडियो, जो जनसामान्य के मध्य संगीत पहुंचाने का माध्यम है, इस पर भी समय–समय पर संगीत कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। जैसे– शास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम, उपशास्त्रीय संगीत का कार्यक्रम, लोक संगीत का कार्यक्रम, सुगम संगीत का कार्यक्रम, फिल्मी संगीत का कार्यक्रम, पाश्चात्य संगीत का कार्यक्रम, कलाकारों का साक्षात्कार सम्बन्धी कार्यक्रम, संगीत सम्मेलनों का सीधा प्रसारण आदि। आधुनिक समय में कोक स्टूडियो, जो एक अंतर्राष्ट्रीय संगीत स्थल है, इसमें भी संगीत के उभरते कलाकारों द्वारा संगीत कला का प्रदर्शन किया जाता है। इन सभी माध्यमों द्वारा मनुष्य अपनी आजीविका का निर्वाहन कर रहा है।

वर्तमान समय मे बहुत से टी0वी0 चैनल्स गायन, वादन और नृत्य के जो प्रोग्राम प्रस्तुत कर रहे है, वे युवकों को इस ओर साधना करके आगे बढ़ने की ओर प्रेरणा देते है जैसे– जीटी0वी0 पर सारेगमप, स्टार प्लस पर छोटे उस्ताद, इण्डियन आइडल व आवाज पंजाब दी ये सभी गायन प्रस्तुति हेतु युवाओं के लिए माध्यम है तथा स्टार वन पर नच बलिए, एन–डी–टीवी इमेजिन पर नचले वे विद सरोज खान, धूम मचा दे, डांस इंण्डिया डांस, कलर्स पर झलक दिखलाजा आदि ये सभी कार्यक्रम नृत्य विधा हेतु युवाओं की प्रेरणा की माध्यम है।

संगीत एवं मीडिया से जुड़े शिक्षार्थियों को अभियांत्रिकी (Business), व्यापार प्रबन्धन व मार्केटिगं के शिक्षार्थियों की तरह ही बहुत से रोजगार प्रदान कराने में भी समर्थ है। यह विषय संगीत एवं मीडिया से सम्बन्धित व्यक्तियों को दुनिया में व्यवस्थित एवं निर्देशित मनोरंजन उद्योग की व्यवसायिक दृष्टि से समस्त

जानकारी प्रदान कर कलाकार एवं समाज के बीच सम्पर्क स्थापित करने के लिये तैयार करेगा। संगीत कला से जुड़े विद्यार्थी उपयोगी वाद्ययंत्रो की रचना कर इस कार्य को एक रोजगार के रूप में अपना सकते है।

यहाँ तक कि व्यवसायिक प्रचार–प्रसार में भी संगीत का प्रयोग अधिक परिमाण में किया जाने लगा है। जो दिखता है, वही बिकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस विज्ञापन के युग में किसी भी वस्तु को बाजार में लोकप्रिय करने के लिए संगीत संयोजन द्वारा उस वस्तु को प्रचारित किया जाता है। जैसे– वाह! ताज, द टेस्ट ऑफ इंडिया: अमूल, ताज महल टी–खुद से मिलो, वॉषिंग पाउडर निरमा, एयरटेल इंस्ट्रूमेन्टल विज्ञापन, गूगली वूगली वॉश: पॉन्डस आदि।

म्यूजिक थेरेपी में भी व्यवसाय की बेहद सम्भावनाएं है, शर्त यह है कि सर्वप्रथम इसके विषय में आत्मज्ञान होना आवश्यक है। केवल व्यवसाय की दृष्टि से कोई उपयोग नहीं करना चाहिए। संगीत चिकित्सा की शिक्षा के लिए देश के विद्यालयों महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में इसकों विषय के रूप में रखा जाना चाहिए तथा इससे सम्बन्धित पाठ्यक्रम भी निर्धारित किए जाने चाहिए, जिससे भविष्य में संगीत चिकित्सा से जुड़े शिक्षक, प्रशिक्षक, विशेषज्ञ की नियुक्ति की जा सकें। आजकल संगीत चिकित्सा से सम्बन्धित शिक्षण प्राप्त करने के पश्चात General Hospitals, Psychiatric hospitals, Special Schools, outpatient clinics, mental health centers, nursing homes, day centers, correctional facilities, hospices आदि कार्यक्षेत्रों में नियुक्त होकर संगीत व्यवसाय किया जा सकता है।

वर्तमान में व्यवसायिक क्षेत्र में अन्य क्षेत्रों की भॉति संगीत कला का भी विशेष स्थान है। आधुनिकता के इस दौर में सांगीतिक क्षेत्र में भी नवीनीकरण दिखाई दे रहा है। गीतों का स्वरूप भी परिवर्तित होता दिखाई दे रहा है। प्रचलित एवं लोकप्रिय फिल्मी गीतो को एक नवीन रूप में आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने वाले डायरेक्टर–प्रोड्यूसर ने भी इस रूप में रोजगार की नई–नई सम्भावनाऍ ढूंढ निकाली है। इन सभी कार्यक्षेत्रों में अपनी कुशलता व निपुणता का समन्वय कर स्वंय की रूचि के अनुरूप व्यवसाय प्राप्त किया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निःसन्देह वर्तमान समय में संगीत एक विशाल एवं सुदृढ़ रोजगार के रूप में उन्नति कर सामने आया है। बहुत से गायक, वादक, तथा सहगायक, सहवादक आदि अपना जीविकोपार्जन संगीत कला के माध्यम से सम्मानपूर्वक कर रहे है। संगीत का प्रत्येक पक्ष, चाहे वह शास्त्रात्मक हो या क्रियात्मक पक्ष हो, रोजगार की दृष्टि से अनेको सम्भावनाओं से जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय आय में भी संगीत का काफी योगदान है। वर्तमान समय में संगीत कला व्यवसायिक रूप में महत्वपूर्ण है। यदि हम वास्तव में संगीत कला की प्रगति चाहते हैं तो संगीत जैसी अद्‌भुत ललित कलाओं से जुड़कर रोजगार प्राप्त करने हेतु बाल्यकाल से ही संगीत के शिक्षण और प्रशिक्षण हेतु बहुआयामी व्यवस्था होनी चाहिए। जिससे संगीत कला आजीविका के क्षेत्र में अपनी जड़ को मजबूत कर सकें। ऐसा होने पर निश्चित ही संगीत कला व्यवसाय के क्षेत्र में अहम भूमिका निभा सकेगी।

सन्दर्भ

1. दत्त, पूनम. भारतीय संगीत शिक्षा और उद्देश्य।

2. ऋषितोष. संगीत शिक्षण के विविध आयाम।
3. वालिया, दीपिका. संगीत कला के विविध आयाम।
4. शर्मा, जीतराम. आधुनिक व्यावसायिक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन. पृष्ठ 30.
5. प्रेम सागर. (2008). रोजगार प्राप्त करने हेतु संगीत एक बहुआयामी क्रियात्मक कला. संगीत पत्रिका. अगस्त।
6. सुरुचि. (2010). संगीत की धुन पर थिरकता कैरियर. संगीत पत्रिका।
7. (2012). संगीत पत्रिका. दिसम्बर. पृष्ठ 29.